INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

निराला की कविता में दलित चेतना

प्रा.डॉ. पटेल शर्मिलाबहन सुमंतराय
हिंदी विभाग
श्रीरंग नवचेतन महिला आर्ट्स कोलेज वालीया
ता. वालीया, जि. भरूच

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: http://doi-ds.org/doilink/05.2021-68888271/IRJHIS2105023

प्रस्तावना :

संस्कृत धातु 'दल' से दलित शब्द की व्युत्पति हुई है। संक्षिप्त शब्दसागर सप्तम संसकरण के अनुसार जिसका अर्थ दबाया, रौंदा या कुचला हुआ होता है।

आधुनिक हिंदी कविता में दलितों की चेतना पर दृष्टिपात हुआ है। निरालाजी के काव्यों में दलित चेतना का विस्तृत वर्णन हुआ है। दलित के संदर्भ में डॉ. नामवरसिंह लिखते है– ''इन कवियों ने मानव को अपने काव्य का विषय बनाकर उपेक्षित, शोषित, पीडित, दीन हीन दलित मानव के हृदय की व्यथा को काव्यरूप दिया है।''1

निरालाजी वर्णव्यवस्था के आदर्शरूप में विश्वास रखते है, उसके रूढिगत रूप में नहीं। उनका मत है कि विकृत वर्णव्यवस्था मानवता को खंडित करती है। रूढिगत वर्णव्यवस्था एवं अस्पृश्यता पर कुठराधात करने के लिए सबसे पहले ब्राह्मणवाद को चकनाचूर करना आवश्यक था। कवि निराला ने यह लोहा मोल लिया। स्वयं ब्राह्मण होने के बावजूद ब्राह्मण जाति को फटकारते हुए निरालाजी ने लिखा –

''ये कान्यकुब्ज– कुल कुलंगार,
खाकर पत्तल में करे छेद,
इनके कर कन्या, अर्थ खेद,
इस विषय बेलि में विष ही फल
यह दग्ध मरूस्थल– नहीं सुजल।''2

इसी कारण निरालाजी ने अपनी बेटी सरोज की शादी में कन्यादान करने हेतु किसी भी ब्राह्मण को नहीं बुलाया। ब्राह्मणों के कारण ही वर्ण व्यवस्था एवं अस्पृश्यता को बढावा मिला। इस संदर्भ में ब्राह्मणों को ही दोषी ठहराते हुए निरालाजी लिखते है–

'' एक दिन ब्राह्मणों ने
हमें पतित किया था–
शूद्र कहलाए हम''3

निराला की कविता में वर्ण व्यवस्था एवं अस्पृश्यता के ऐसे कई उदाहरण मिलेंगें।

दलित वर्ग के अपमानित एवं अत्याचारमय जीवन का , उनको सरेआम लूटना, बहू बेटियों की इज्जत को नीलाम करना जैसी व्यथा भरी कथा का एक उदाहरण देखिए–

'' सह जाते हो
उत्पीडन की क्रीडा सदा निरंकुश नग्न
हृदय तुम्हारा दुर्बल होता भग्न,
अन्तिम आशा के कानों में
स्पन्दित हम सबके प्राणों में
अपने उर की तप्त व्यथायें
क्षीण कंठ की करूण कथायें
क्ह जाते हो
और जगत की ओर ताककर
दुख हृदय का क्षोभ त्यागकर
सह जाते हो।''4

निराला की कविता में सामंतवादी शोषण की अग्नि में झुलसते हुए किसानों की दशा का सफल अंकन हुआ है। किसानों की असहाय स्थिति को मार्मिक ढंग से अभिव्यक्ति दी है, जिसका प्रभाव चिरकाल तक हमारे मानसपट पर छाया रहता है–

''सूख गया किसान एकाकी
रोया, रहा न लेखा बाकी,
कर्म धर्म को करके साखी,
दूहरी डगर भरी शीत की।''5

निरालाजी किसानों के सच्चे साथी थे, इसीलिए वे उनके सुख दुःख के हमेंशा हिस्सेदार बनते थे। उन्होंने 'सेवा प्रारंभ' कविता में शोषण एवं अकाल से मर रहे किसानों की कारूणिक दशा का स्वाभविक चित्रण किया है। जैसे–

''दुबले पतले जितने लोग,

लगा देशभर को ज्यों रोग,

दौडते हुए दिन में स्यार

बस्ती में– बैठे भी गीध महाकार''6

छायावादी युग में पुरे देश में औद्योगिक मंदी के कारण भारतीय मजदूरों का जीना मुश्किल हो गया। मजदूरों के धर उजड गये थे। ऐसे असहाय बने मजदूरों के धर का चित्र अंकित करते हुए निरालाजी लिखते है–

''कच्चे धर, ऊबडखाबड, गन्दे

गलियारे बंद पडे कूल धन्दे।''7

ऐसी उदासी में मजदूरों को भारी संधर्ष करना पडा। अविरत परिश्रम ही एकमात्र जीने का सहारा। ऐसी स्थिति में परिश्रमरत मजदूर का वर्णन देखिए–

''खे खे कर थके हाथ,

कोई भी नहीं साथ

श्रम शीकर भरा माथ,

बीच धार ओ।''8

इसका परिणम यह हुआ की मजदूर वर्ग आर्थिक विपन्नता का शिकार हो गया।

'कुकुरमुत्ता' में निरालाजी ने सर्वहारा जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। 'कुकुरमुत्ता' और 'गुलाब' कविताओं के संवाद में सर्वहारा की ओर से सामन्ती वर्ग के प्रतिक पर चोट की गई है। इसलिए क्रान्ति भरे स्वर में कुकुरमुत्ता गुलाब से सवाल करता है–

''अबे सुन बे, गुलाब

भूल मत जो पाई खूशबू, रंगोआब

खून चूसा खद का तूने अशिष्ट,

डाल पर इतराता है केपीलिस्ट।

कितनों को तूने बनाया है गुलाम ?''9

इल्हाबाद के पथ पर पत्थर तोडनेवाली मजदुरनी का जो चित्र निरालाजी ने प्रस्तुत किया है वह बहुत ही हृदयस्पर्शी बन पडा है। इसमें जीवन का यथार्थ कटुतापूर्ण शैली में चित्रित हुआ है। यहाँ एक श्रमिक नारी ग्रीष्मकालीन दोपहर की तमतमाती धूप में पत्थर तोडती चित्रित की गई है। यथार्थ की भूमि पर उसके दुःख दैन्य का करूण चित्र कवि ने सहानुभूति पूर्वक खींचा है–

''वह तोडती पत्थर,

इल्हाबाद के पथ पर''10

'भिक्षुक' कविता में किया हुआ भिक्षुक का वर्णन केवल पाठकों के हृदय को कंपित नहीं करता बल्कि यह भी उजागर करता है कि भारतीय समाज का आज कितना पतन हो चुका है। कवि ने सडक पर पडी हुई जुठी पतलों को चाटने के लिए कुत्तों से होड करते हुए भिखारियों का कितना कारूणिक चित्र खिंचा है –

''वह आता–

दो टूक कलेजे के करता पछताता

पथ पर आता।

पेट पीठ दोनों मिलकर है एक

चल रहा लकुटिया टेक,

मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को

मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता–

दो टूक कलेजे के करता पछताता

पथ पर आता।''11

छायापाद के पहले नारी का शारीरिक चित्रण हिंदी की अनेक कविताओं एवं कालखंडो में प्रचुर मात्रा में हुआ है। लेकिन वहाँ वह एक मानवी के रूप में नहीं बल्कि पुरूष की उपभोग्या वस्तु के रूप में है। नारी और पुरूष में मादा और नर यही एक भेद है जो प्राकृतिक है, उसे छोडकर दोनों में समानता की असलियत लिखने का साहस कवि निराला ने किया है–

''दोनों हम भिन्न वर्ण

भिन्न जाति, भिन्न रूप

भिन्न धर्म भाव पर

केवल अपनाव से, प्राणों से एक है।''12

नारी को पशु के समान मानकर पुरूष की तुलना में उसे हीन और कमजोर समझकर कभी उसे अपनी शक्ति को पहचानने का मौका तक नहीं दिया गया, बल्कि नारी को मात्र पुरूष के जीवन का एक उपकरण ही माना गया–

''क्षुधा कामवश गत युग ने

पशु बल से कर जन शासित

जीवन के उपकरण सदृश्य

नारी भी कर ली अधिकृत।''13

नारी की यह परवशता को देखकर उसकी मुक्ति के लिए निरालाजी क्रान्ति का आहवान करते है–

''तोडो तोडो तोडो कारा

पत्थर की निकले फिर,

गंगा जल धारा।

गृह गृह की पार्वती

पुनः सत्य सुंदर शिव को सँवारती

उर उर की बनो आरती।''14

निरालाजी के मन में भारतीय विधवा नारी के प्रति गहरी संवेदना है। इसलिए आधुनिक युग में विधवा की दशा पर लिखी गई रचनाओं में निराला की करूण रसपूर्ण 'विधवा' शीर्षक कविता अत्यधिक प्रसिध्ध है–

''वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा सी

वह दीप शिखा सी शान्त, भाव में लीन

वह क्रूर काल तांडव की स्मृति रेखा सी,

वह टूटे तरू की छूटी लता सी दीन

दलित भारत की ही विधवा है। ''15

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि निरालाजी ने अपनी कविता मे दलित चेतना का कालजयी चित्रण किया है। धर्म, वर्ण, पंथ, जाति से अलग रहकर क्रांति भरा यथार्थ वर्णन कर मानवता को महत्व दिया है। उनका जीवनदर्शन मानवतावादी है। विश्ववेदना से भरा उनका हृदय दलित शोषित की करूण पुकार सुनकर उसे गले लगाने को आतुर हो उठा है। निरालाजी स्वयं वसुदैव कुटुम्बकम की भावना के पक्षपाता रहे है। विश्वमानवता के विकास के लिए आवश्यक है कि जातिभेद एवं वर्ण भेद की ही समाप्ति हो जाये।

संदर्भसूचि :

1 छायावाद– नामवर सिंह पृ 34

2 सरोज स्मृति–अपरा–निरालाजी पृ 154

3 स्वामी प्रेमानंदजी महाराज–अणिमा पृ 63

4 दीन–अपरा–निरालाजी पृ 113

5 सांध्यकाकली–निरालाजी पृ 581

6 सेवा प्रारंभ–निराला रचनावली भाग 1 पृ 356

7 खजोहरा–नये पत्ते –निरालाजी पृ 18

8 अर्चना–निरालाजी पृ 88

9 कुकुरमुत्ता–निरालाजी पृ 39

10 अपरा –निरालाजी पृ 29

11 भिक्षुक–निराला रचनावली भाग 1 पृ 47,48

12 प्रेयसी–अपरा – निरालाजी पृ 126

13 पंत –नारी चित्रण–युगवाणी पृ 65

14 मुक्ति– अनामिका– निरालाजी पृ 141

15 अपरा –निरालाजी पृ 57